Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-173-178

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 173-178
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

डॉ. नीरज चौबे
सहायक प्राध्यापक
भिलाई मैत्री कॉलेज रिसाली
भिलाई, दुर्ग,
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय,
दुर्ग, छत्तीसगढ़.

Corresponding Author :

डॉ. नीरज चौबे
सहायक प्राध्यापक
भिलाई मैत्री कॉलेज रिसाली
भिलाई, दुर्ग,
हेमचंद यादव विश्वविद्यालय,
दुर्ग, छत्तीसगढ़.

कठगुलाब उपन्यास में महिला संघर्ष

मृदुला गर्ग आठवीं दशक की महत्वपूर्ण कथा लेखिका हैं। अब तक उनके आठ उपन्यास और कई कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। मृदुला गर्ग के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष संबंधों को समझने पर बल दिया गया है। उनके ज्यादातर उपन्यास उच्च-मध्य वर्गीय और मध्य वर्गीय पुरुष के आपसी संबंधों को केन्द्र में रखते स्त्री-पुरुष संबंधों में उनके यौन पहलू को उन्होंने बहुत बोल्डनेस के साथ उभारने की कोशिश की है। उनके कई उपन्यासों में भारतीय स्त्री विदेशी पुरुषों के साथ प्रेम करती हुई दिखाई देती है। उनके उपन्यासों में भले ही भारतीय स्त्री विदेशी पुरुषों के साथ प्रेम करती है, फिर भी वह भारतीयता को नहीं छोड़ती। 'वंशज' उपन्यास सामाजिक है। 'वंशज' दो पीढ़ियों का संघर्ष - बाप अंग्रेज न्याय प्रिय है, बेटा भारतीय विचारवादी है। वैसे ही 'चित्तकोबरा' की मनु भारतीय है। रिचर्ड अमेरिकी विचारवादी हैं, पर दोनों एक-दूसरे को बहुत प्रेम करते हैं। 'उसके हिस्से की धूप' उपन्यास की मनीषा पति के रहते हुए भी मधुकर जैसे पर पुरुष से शादी कर लेती है। जब मधुकर के प्रेम में अधूरापन लगता है, तो राकेश से शादी कर लेती है। उसी प्रकार 'मैं और मैं' उपन्यास की माधवी अच्छी लेखिका है। 'माधवी' और 'मनीषा' के पात्रों में बहुत समानताएं हैं। 'चित्तकोबरा' की 'मनु' तथा 'उसके हिस्से की धूप' की मनीषा की पसंद एक-दूसरे से मिलती-जुलती है। दोनों ही सेक्स को महत्व देने वाली हैं। जब लेखिका ने 'अनित्य' उपन्यास लिखा तो, इस उपन्यास में उनकी विचारधारा ही बदल गयी है। 'अनित्य' में भी यौन-विचार हैं, लेकिन उनको उतना महत्व नहीं दिया गया है। लेखिका का लक्ष्य यहां सिर्फ आज़ादी आंदोलन, गांधी, नेहरू और भगत सिंह जैसे नेताओं के

विचारधारा पर था। जब उनका अंतिम उपन्यास 'कठगुलाब' आया तो, दुबारा स्त्री की घुटन, प्रेम से वंचित और देहावसान को लेकर लिखने लगी हैं। 'कठगुलाब' में कुल पांच पात्र हैं। वे पांचों पात्र कहीं न कहीं एक-दूसरे से संबंधित हैं। जब तक हम पूरे उपन्यास को पढ़ नहीं सकते, तब तक उपन्यास को समझना मुश्किल है। अलग-अलग कटे हुए फूलों की पंखुड़ियों को लेखिका ने मिलाकर उपन्यास का आकार दे दिया है।

इस उपन्यास के पहले भाग में 'स्मिता' की कहानी है, जिसे उपन्यास का कथा वाचक भी कह सकते हैं। उपन्यास 'कठगुलाब' स्मिता के दन शब्दों से शुरु होता है - "मेरा नाम स्मिता है। कोई बीस साल बाद मैं अपने घर लौटी हूं। वही मिट्टी से भरा घर। कुछ याददाश्त से धुंधलाया, कुछ एकाएक सामने पड़ जाने पर अनचीन्हा। पर अपरिचय ज्यादा देर नहीं टिका। टिकता कैसे ? बीस बरस कुछ भी नहीं है, यहां के लिए। सच कहती हूं, शहर के भीतर घुसी तो लगा, अभी तो गयी थी, एकाध साल हुआ होगा। कुछ भी तो नहीं बदला। वही आवाजें, आवाजों का जमघट, शोर, फिर भी शोर में अलग-अलग पहचान बनाये स्वर। वही रौशनी और अंधेरे का खिलवाड़, कभी रौशनी तो तत्काल अंधेरा हाजिर। वही रुक-रुककर बहती हवा। वही चारों तरफ फैला मिट्टी का साम्राज्य, जो दीवारों की नाकेबन्दी नहीं मानता। इसीलिए तो दीवारों से घिरे घर में न आकर भी कहती हूं, मैं घर लौटी हूं।"[1]

स्मिता अपनी बहन नमिता और जीजा के साथ रह कर पढ़ाई करती है। वहां उसका जीजा उसका शारीरिक शोषण करता है, जिससे वह अपनी बहन का घर छोड़कर अमेरिका चली जाती है। तब वहां जाने पर वह अपनी अकेली जिंदगी को शुगर मेपल की झाड़ी से जोड़ती है। वह शुगर मेपल के नीचे सोकर उससे इस प्रकार वार्तालाप करती है - " क्या बतलाऊं शुगर, कितना हंसे थे सब लोग। बहुत समझ, चिड़िया अंडे नहीं दे गई तेरे इस घोंसले में। नमिता ने कहा था कौन नमिता। कोई नहीं। यूं ही नाम फिसल गया जुबान से। बहस मत करो, शुगर। मैंने स्मिता कहा होगा तुमने गलत सुन लिया होगा। यहां सब मुझे समिता कहते हैं न, स्मिता कहा नहीं जाता। तुम कहकर देखो। नहीं कहा गया न ? अरे, इतना सिर मत हिलाओ और कितने पत्ते झड़वाओगी ? हां शुगर, तुम्हारी समिता के बाल भी खूब घुंघरालू थे। अब तो बिल्कुल सीधे हैं। बतलाया तो था कैसे हुए सीधे।"[2]

स्मिता अपनी जीवन कहानी अपनी ही जुबान से इस प्रकार कहती है - " देखा आपने मेरी जिंदगी का आधार था, एक जोड़ी चश्मा। क्या आधुनिक बोध है। आज मैं अपने जीवन के इस विद्रूप पर हंस सकती हूं। बहुत मेहनत करके हंसना सीखा है मैंने। वही आज मेरी एक मात्र पूंजी है। "[3]

अमेरिका में स्मिता की मुलाकात ' साईकाईट्रिस्ट जिम जारविस ' से होती है, फिर दोंनों शादी करके एक साथ रहने लगते लेकिन कुछ दिनों बाद जिम भी उसके ऊपर अत्याचार करना शुरु कर देता है, जिससे वह तंग आकर वहां से भाग जाती है और शरण लेने के लिए 'रॉ' (रिलीफ फॉर एब्यूज़्ड विमेन) नाम की संस्था में जाती है। जहां वह शादी के बाद काम करती थी। वहीं पर उसकी मुलाकात मारियान जो उपन्यास की दूसरी पात्र हैं, से होती है। मारियान भी पुरुषों द्वारा सताई हुई है, एक जो उसकी मां का दूसरा पति है, व दूसरा उसका खुद का पति इर्विंग। इर्विंग उन मर्दों में से था जिनका ख्याल था कि औरतें केवल बिस्तर के लिए बनाई गयी हैं। इर्विंग ने मारियान को शारीरिक, मानसिक हर प्रकार से प्रताड़ित किया पर चाह कर भी मारियान कुछ नहीं कर पायी क्योंकि समाज में लोग केवल तमाशा देखते और वह कुछ नहीं कर सकती। उसने भी इर्विंग को छोड़कर रॉ को ल्वाइन कर लिया। वहीं स्मिता मारियान से मिली दोनों अंतरंग सहेलियां बन गयी।

दोनों एक साथ 15 साल रहीं मगर शादी दोनों ने नहीं किया। प्रेम संबंध दोनों ने बनाये ये उनका निजत्व था। स्मिता को जारविस ने तलाक देकर दूसरी शादी कर ली और उस उमय वह हार गयी थी। उसके पीछे खड़ी रॉ स्त्री-शक्ति भी हार गयी थी। हारकर वह हिन्दुस्तान नहीं आना चाहती थी इसलिए अमेरिका में ही दूसरे शहर, शिकागो चली गयी और ऑक्सफॉम में नौकरी कर ली थी और उसका साथ मारियान ने दिया। पन्द्रह साल बाद स्मिता को ऑक्सफॉम का एक प्रोजेक्ट पूरा करने हिंदुस्तान आना पड़ता है। चलते-चलते भावुक होकर स्मिता, मारियान को हिंदुस्तान आने का निमंत्रण देती है। उतनी ही भावुकता से, उसने जरूर आने का वादा भी किया था।

"मेरा नाम नर्मदा है। मेरी कहानी में सुनाने का भला क्या है ? कोई क्यों सुनना चाहेगा उसे ? मेरी जिंदगी में कभी कुछ हुआ भी नहीं। वह तो ये आयी है ना, सागर पार दूर अमेरिका से, बीबी जी की छोटी बहन, क्या नाम है, स्मिता, मैं तो मेम बीबी ही कहूं हूं इसे, अमेरिका से आयी है ना। ये पीछे पड़ गयी मेरे। कहानी सुनाओ अपनी कहां की हो, परिवार कहां है तुम्हारा, बचपन किस तरह बीता ..... "[4]

नर्मदा स्मिता की बहन नमिता के यहां बीस-बाईस साल से काम करती थी। नमिता के दो बच्चों को नर्मदा ने पाल-पोस कर बड़ा किया। नीरजा डॉक्टरी की पढ़ाई और प्रदीप ऑफिस जाता है। नर्मदा, स्मिता को नमिता व उसके परिवार के बारे में सब कुछ बताती है कि कैसे उसके जीजा को लकवा मार गया और बच्चे क्या करते हैं, नर्मदा अपने व नमिता के पूरे संघर्ष की कहानी स्मिता को बताती है। उपन्यास की चैथी नारी पात्र का नाम असीमा है। वह मर्दों से बहुत चिढ़ती है। कहती है –"अब आये तो कोई मर्द मेरी सीमा में, टांग तोड़कर पूंछ बना दूं। मुझे मर्दों से नफरत है। सब एक से बढ़कर एक हरामी होते हैं। सबसे बढ़ा हरामी था, मेरा बाप। लम्बा, तगड़ा, खूबसूरत हरामी। उसके सामने मेरी मां, न पिद्दी का शोरबा। हर तरह की सीमा में बंधी, एक अड़ियल, ज़िद्दी औरत। "[5]

असीमा के बाप ने उसकी मां के रहते दूसरी औरत से शादी कर ली जिससे वह हर आदमी से नफरत करती है। नर्मदा पहले असीमा के घर काम करती थी। असीमा की मां सिलाई करके अपने बच्चों को पालती है। असीमा एक दफ्तर में काम करती है। वहीं विपिन मजूमदार भी काम करता है, जो असीमा का अच्छा मित्र है। असीमा की मां चाहता है कि असीमा विपिन से शादी करके अपना घर बसा ले, परन्तु असीमा ऐसा नहीं करती।

उपन्यास का आखिरी व इकलौता पुरुष पात्र विपिन मजूमदार है।

"मेरा नाम विपिन मजूमदार है।"

"देखा," असीमा कहती, "मर्द है, तभी अपने नाम के आगे पुछल्ला लगाए बिना नहीं रह सका।" सच, आदत पड़ गयी है। " क्यों नहीं पड़ेगी, हरामियों को अपने बाप का नाम सिद्ध करके दिखलाने की बड़ी छटपटाहट रहती है," असीमा कहती। "चलो यही सही।"[6] उपन्यास में विपिन स्त्रियों का समर्थन करता है। प्रत्येक स्त्री पुरुषों द्वारा सताई होती है। विपिन उनके दर्द को समझता है। पिता के मरने के बाद उसकी मां उसे कितनी तकलीफ व कठिनाईयों से अकेले पालती है, इसका उसे अहसास है। उसकी जिंदगी में असीमा, स्मिता, नीरजा सब आई लेकिन उसकी संतान की इच्छा कोई पूरी नहीं कर सकी।

इस उपन्यास में हर पात्र किसी न किसी रुप में एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। अंत में असीमा, स्मिता और विपिन गोधड़ गांव जाते हैं, वहां जाकर ग्रामीण परिवेश में जी रहे लोगों से मिलकर उनकी असुविधाओं को देखते हुए उनके जीवन विकास की योजना बनाते हैं। उपन्यास में कठगुलाब हर स्त्री का प्रतीक है स्मिता, नर्मदा, मारियान और असीमा के जीवन की सही देखभाल हो पाती, सही पुरुष का साथ मिला होता तो

वे भी कठगुलाब की तरह झनन-हुम, झनन-हुम खिल उठती।

'कठगुलाब' उपन्यास की लेखिका का मुख्य उद्देश्य है - मनुष्य के जीवन का वास्तविक अर्थ बताना। 'कठगुलाब' शीर्षक पूर्णतः प्रतीकात्मक है, जिसके विभिन्न अर्थ उपन्यास के कथ्य के संदर्भ में लिए जा सकते हैं। लेखिका के संदर्भ में यह उस पौधे का नाम है, जिसे उनके दिवंगत पुत्र ने बचपन में लगाया था। अतः पुत्र को समर्पित इस रचना का नामकरण उसकी स्मृति का प्रतीक है।

'कठगुलाब' उपन्यास की केन्द्रीय संवेदना मातृत्व (उर्वरता) से भी संबद्ध है। 'कठगुलाब' की पंखुड़ियां झड़ जाने के बाद भी उसमें बीज बचा रहता है ठीक उसी प्रकार उपन्यास में नारी संघर्ष करते हुए पराजय के बाद भी संघर्षरत रहती है।

मृदुला जी का 'कठगुलाब' उपन्यास शैली की भी दृष्टि से एक महत्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में भारतीय एवं पाश्चात्य दोनों परिचेश चित्रित हैं। अतः शिक्षित समुदाय की शब्दावली और विदेशज शब्दों का आना स्वाभाविक है। कथा के पांचों प्रमुख पात्र कथा वाचक के रूप में अपनी-अपनी कहानी खुद सुनाते हुए स्मृतियों में चले जाते हैं व कथा को आगे बढ़ाते नजर आते हैं। इस उपन्यास में प्रमुख कथा के अलावा अनेक उपकथा है। ये उपकथा अलग-अलग देश तथा अलग-अलग वर्ग के स्त्रियों की अधूरी जीवन कथायें हैं। उपन्यास के पात्र उसके कथा के ही अंग है। लेखिका ने पात्रों को स्वतंत्र रूप् से जीने दिया है।यह एक स्त्री-प्रधान रचना है। अधिकांश पात्र वर्गगत हैं, जिन्हें किसी एक खांचे में फिट नहीं किया जा सकता। मृदुला जी अपने उपन्यास 'कठगुलाब' के माध्यम से उपन्यास जगत में अपनी एक अलग छवि बनायी है। 'कठगुलाब' में लेखिका ने पांच पात्रों को लेकर पांच अध्याय की रचना की है। जब तक हम उपन्यास के पांचों अध्यायों को पढ़ नहीं लेते तब तक उपन्यास को समझ पाना मुश्किल है। 'कठगुलाब' के पांचों अध्याय में पांचों पात्रों के चरित्र को अलग-अलग भाग में मृदुला जी ने दर्शाया है। मृदुला जी ने हर वर्ग की स्त्री को ध्यान में रखकर 'कठगुलाब' की रचना की है। इन्होंने हर वर्ग की शोषित और दुखी (प्रताड़ित) स्त्री को लेकर 'कठगुलाब' उपन्यास की रचना की है। 'कठगुलाब' में लेखिका ने स्त्री के घुटन, प्रेम से वंचित मौन सेक्स को केन्द्र में रखा है। मृदुला जी का उपन्यास 'कठगुलाब' हिन्दी की कुछ श्रेष्ठ रचनाओं में से एक है। मृदुला जी इस उपन्यास में स्त्री की भारतीय और तात्कालिक स्थिति का, संवेदनाशील स्वाभाव का पुरुष के साथ विभिन्न स्तरीय संबंधों का ताना-बाना अपने गहन जीवनानुभव और साहित्य ज्ञान के स्तर पर व्यक्त किया है।

इस उपन्यास में स्मिता, नर्मदा, मारियान, असीमा हर स्त्री का प्रतीक कठगुलाब है। मृदुला जी ने इस बात को बहुत अच्छे से व्यक्त किया है कि अगर स्मिता, नर्मदा, मारियान, असीमा के जीवन की भी सही तरीके से देखभाल हुई होती, सही पुरुष का साथ मिला होता तो इनकी भी जिन्दगी कठगुलाब की तरह खिल गयी होती।

'कठगुलाब' उपन्यास में लेखिका ने नर्मदा की भाषा उसकी स्थिति के अनुकूल अशिक्षित व गवार की भाषा का प्रयोग किया है। जिससे उपन्यास कठगुलाब की नर्मदा का नाम का प्रकरण विशिष्ठपूर्ण बन गया। नर्मदा प्रकरण के कुछ अंश प्रस्तुत है - "हां नहीं जलता। जल-जल के मुर्दा पड़ चुकी उंगलियों की पोरे। उंगली क्या, हाथ-पांव,सिर-आंख सब जला करे थे, भट्टी के झुलस में। हां जहां-जहां हां फफोले पड़ा करे थे, बदन पर पिघले शीशे के छींटों से हां दर्द से। हाँ दर्द से तड़पा करूं थी मैं। बिलखा करूं थी, बिलबिलाया करूं थी। चाय की बची पड़ी गीली पट्टी लगा के छोड़ दे थे, फफोले लगा देवे थे, फिर कामपरा सिर धुन के कलपा करूं थी में। हां रोऊं थी। सिसकू

थी। तुमसे मतलब। क्यों याद दिलाओ हो वो दिन। मैं याद ना करना चाहती।"[7] नर्मदा का दर्द उसी भाषा में इस प्रकार सरकार होती है। मृदुला गर्ग ने उपन्यास 'कठगुलाब' में केवल नर्मदा ही नहीं बल्कि मारियान, स्मिता, असीमा, गनपत, विपिन आदि सभी की भाषा में पात्रानुकूल प्रयोग हुआ है। जैसे नारीवादी असीमा द्वारा प्रयुक्त भाषा - "मेरी जुबान बंद हो गई थी पर मन ही मन मैं दोहराती रही, हरामी – हरामी – हरामी ..... मैंने तय कर लिया था कि उन दोनों के लिए, हमेशा उसी लफ्ज़ का इस्तेमाल करूंगी। हरामी नंबर एक मेरा बाप। हरामी नंबर दो मेरा भाई। मां चाहे तो पूजा करें उनकी। मैं किसी साले मर्द से वास्ता नहीं रखना चाहती।"[8] लेखिका ने केवल 'कठगुलाब' ही उपन्यास नहीं बल्कि अन्य उपन्यासों में भी पात्रों के अनुकूल भाषा का ध्यान रखा है।

मृदुल जी ने अपने उपन्यासों में वाक्यों को अधूरा-अधूरा छोड़कर बिंदुक भाषा (डॉट्स) का प्रयोग करते हुए उन वाक्यों को पूरा की है। उपन्यासकार बिंदुक भाषा के माध्यम से बहुत कुछ कह देता है - " बरसों लंबी विराम सड़क पर एक छोटा सा पड़ाव किसी ऊंचे दरख्त की छांव में पल दो पल..... याद भर के लिए..... एक चुंबन।"[9] उपन्यास 'कठगुलाब' में बिंदुक प्रयोग का उदाहरण है - "सब मेरा कसूर है और प्रदीप का। न रात में वह यूं गला फाड़कर रोता, न मैं तेरे पास से उठकर जाती। हम दो होती तो..... रोज तू सिटकनी लगाकर सोती है।..... मैं न आती तो..... बाहर के दरवाजे पर तो मैंने ताला लगाया था..... खोल लिया चोरों ने। मेरी अलमारी खुली पड़ी है, सोने की चेन और अंगूठी गायब है। पर उनका क्या अफसोस करना। तेरे साथ जो घटा..... है भगवान।"[10] लेखिका ने बिंदुओं के प्रयोग से घटित बुरी बात को टालने की कोशिश की है, जो पाठक उन रिक्त स्थानों को समझने में सफल होते हैं।

निष्कर्ष : परन्तु स्मिता के जीवन में उसका जीजा, नर्मदा के जीवन में उसके जीजा-बहन, मारियान की जिंदगी में इर्विंग और असीमा की जिंदगी में उसके पिता द्वारा किए गए दूसरे विवाह इन सबके जीवन को तबाह न करते तो इनका भी जीवन कठगुलाब की तरह खिल गया होता। हिन्दी में इस तरह के उपन्यासों की कमी है। इस उपन्यास में स्त्री का शोषण और उसके ऊपर हुए अत्याचार को सहते हुए एक स्त्री (आत्मनिर्भर तथा पुरुष के बराबर स्वयं को सिद्ध करने के लिए) किए गये संघर्ष को बहुत सही ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इस उपन्यास को कम से कम हर हिन्दी क्षेत्र के पुरुष को पढ़ना चाहिए। उपन्यास के पुरुष पात्र विपिन की उलझनें पुरुषों के सोच का प्रतिनिधित्व करेंगी। ऐसा निश्चित है।

लेखिका अपने बोल्डनेस के लिए जानी जाती है, जो उनके हर उपन्यास में देखने को मिलता है।लेखिका ने अपने हर उपन्यास में स्त्री के संघर्ष व शोषण की कहानी लिखी है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मृदुला जी के उपन्यास स्त्री प्रधान हैं। उन्होंने अपने उपन्यास में हर वर्ग की स्त्री को ध्यान में रखते हुए उपन्यास की रचना की है। स्त्री कितनी भी शिक्षित हो जाये, वह अमेरिका में रहे या हिन्दुस्तान में उसका शोषण एक बड़ी सच्चाई है। हर समाज में स्त्रियों को दबाया जाता है। दुनिया के अधिकांश देश पुरुष प्रभुत्ववादी हैं।

'कठगुलाब' की नायिका असीमा पुरुषों से चिढ़ती है। वह पूरी तरह से संघर्ष करती है परन्तु पराजित होती है। पुरुष प्रधान देश में औरतों को केवल एक भोग की वस्तु समझा जाता है, जो हम मृदुला जी के उपन्यासों में देख सकते हैं। ऐसा नहीं कि लेखिका पुरुषों से नफरत करती है, उन्होंने इस उपन्यास में विपिन जैसे पात्र को भी रखा है जो स्त्रियों के दर्द और तकलीफ को समझता है। लेखिका ने यह समझाने की कोशिश की है, कि स्त्री कितनी भी शिक्षित हो जाये और कहीं भी किसी भी देश चली

जाये पुरूष उन्हें केवल भोग-विलास की वस्तु ही समझता है और उनका शोषण करता है। लेकिन मृदुला गर्ग की स्त्रियां मानसिक व शारीरिक शोषण होने के बाद भी पराजित नहीं होती।

उपन्यास के संवादों में रोचकता, स्वाभाविकता, अनुकूलता की जरूरत होती है। इस दृष्टि से 'कठगुलाब' की संवाद योजना पूर्णतः सफल कही जायेंगी। इसके संवाद सरल एवं भावानुकूल हैं। लेखिका ने छोटे-छोटे वाक्यों का प्रभावी प्रयोग किया है। किसी-किसी संवाद में तो केवल एक ही शब्द में पूरे भाव को प्रकट करने में सफल है।

कुल मिलाकर 'कठगुलाब' के माध्यम से लेखिका यह स्पष्ट करना चाहती है कि देश और वर्ग की सीमा से परे हर देश के वर्ग की स्त्रियां पुरुषप्रभुत्ववादी शोषण की शिकार हैं।

संदर्भ सूची :

1. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या – 9.
2. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या – 30.
3. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या – 18.
4. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या – 123.
5. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या – 165.
6. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या – 211.
7. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ , नई दिल्ली, नौवां संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या –125.
8. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ , नई दिल्ली, नौवां संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या –149.
9. मृदुला गर्ग, 'चित्तकोबरा', नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, संस्करण -2013, पृष्ठ संख्या –155.
10. मृदुला गर्ग, 'कठगुलाब', भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, नौवां संस्करण -2016, पृष्ठ संख्या –21.

•